महादेवी वर्मा के काव्य की शैलीगत विशेषताएँ

① महादेवी के काव्य में प्रतीक-योजना

छायावाद में ऐसे अनेकानेक प्रतीकों की सृष्टि की है जो सूक्ष्म भावों, रूप-विशेषों एवं व्यापारों को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ होते हैं तथा जिनके द्वारा काव्य में अपूर्व चमत्कार भी आता है। महादेवी ने भी ऐसे अनेक प्रतीकों का प्रयोग करके अपनी काव्य-कला को सुसज्जित किया है। उदाहरण के लिए 'टूट गया वह दर्पण निर्मम' गीत को ले सकते हैं। जिसमें 'दर्पण' को माया का प्रतीक बनाकर बड़ी ही रमणीय कल्पना की गई है —

टूट गया वह दर्पण निर्मम!
किसमें देख सँवारूँ कुन्तल, अँगराग पुलकों का मल-मल,

ऐसे ही 'दीपक' को जीवन का प्रतीक मानकर बड़ी ही मनोरम कल्पनाएँ की हैं —

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

② लाक्षणिकता

छायावादी काव्य में सबसे अधिक लाक्षणिक पदावली का प्रयोग हुआ है। इसमें प्रायः ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनका शाब्दिक अर्थ अभिधा शक्ति से भिन्न लक्षणा शक्ति के द्वारा जाना जाता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से काव्य में अधिक चारुता और सुन्दरता आ जाती है — जैसे —

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक,
जलमय सागर का उर जलता
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!

उपर्युक्त पद में 'स्नेहहीन दीपक' का अर्थ तेल बिना जलते हुए दीपक अर्थात तारे हैं, 'सागर का उर जलता' का अभिप्राय समुद्र की बड़वाग्नि से है, और 'विहँस-विहँस मेरे दीपक-जल' का आशय उज्ज्वल प्रकाश के साथ प्रसन्नतापूर्वक वेदना की आग में जलना है।

③ चित्रमयी भाषा

छायावाद ने ऐसी चित्रोपम भाषा का प्रचार किया जिसमें किसी व्यक्ति, दृश्य एवं घटना का संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता होती है। महादेवी ने भी ऐसी ही चित्रमयी भाषा का प्रयोग किया है, जैसे —

कह दे माँ क्या अब देखूँ!
देखूँ खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को
तेरी चिर यौवन-सुषमा
या जर्जर जीवन देखूँ!

इसमें कवयित्री ने भारत की तत्कालीन स्थिति का चित्रमयी अंकन किया है। जिसमें ~~थे~~ अंग्रेजों के अत्याचार से भारतवासी ~~क्षुब्ध~~ क्षुब्ध एवं जर्जर जीवन जीने के लिए बाध्य हो गए थे।

④ उपचार वक्रता

उपचार वक्रता के अन्तर्गत ऐसा वर्णन किया जाता है, जिसमें अमूर्त ~~को~~ में मूर्त का, घन में द्रव का, अचेतन में चेतन का आरोप किया जाता है तथा मैं काव्य में नूतनता एवं वक्रता उत्पन्न की जाती है। जैसे -

"छाया की आँख मिचौनी, मेघों का मतवालापन,
रजनी के श्याम कपोलों पर, ढरकीले श्रम के कन,
~~फूलों~~ फूलों की मीठी चितवन, नभ की ये दीपावलियाँ,
पीले मुख पर संध्या के वे किरणों की फुलझड़ियाँ।"

उपर्युक्त पंक्ति में छाया जैसे अमूर्त पदार्थ को आँख-मिचौनी खेलते हुए दिखाया गया है, मेघ जैसे अचेतन पदार्थ को चेतन की तरह मतवाला कहा गया है। रजनी जैसे अमूर्त एवं अचेतन को मूर्त एवं सचेतन नारी कहकर उसके कपोलों पर पसीने की बूँदों की तरह तारों को छिटकते हुए कहा है इसी प्रकार फूलों को मीठी चितवन वाला एवं सन्ध्या बेला को मूर्त एवं सचेतन नारी कहा है जिसके मुख पर किरणों की फुलझड़ियाँ झलक रही हैं।

(5) नादात्मकता :

नादात्मकता द्वारा कवि ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग करते जो पदार्थ का भी बोध कराते हैं और उस पदार्थ से निकलने ध्वनि का भी, जिसमें शब्दों द्वारा ही वस्तुस्थिति पूर्ण आभास मिल जाता है। महादेवी के 'हरसिंगार झरते हैं' में हरसिंगार के फूलों के झरने का ध्वनिपूर्ण वर्णन किया है। ऐसे पद्य विहंगों का कलरव धुलता जल की कलकल में ... कन्दर पक्षियों के कलरव के साथ-साथ जल की कल-कल भी स्पष्ट सुनाई पड़ रही है।

(6) नवीन आलंकारिकता।

छायावाद ने उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, रूपकातिशयोक्ति आदि प्राचीन अलंकारों के अतिरिक्त पाश्चात्य काव्य से प्रभावित होकर तीन नये अलंकारों का अत्यधिक प्रयोग किया है। इनके नाम मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय और ध्वन्यर्थव्यंजना। महादेवी ने प्रकृति पर चेतनता का आरोप करते हुए बसंत-रजनी को एक अभिसार-सुन्दरी की भाँति अंकित करके उसे सम्पूर्ण चेतन व्यापारों से परिपूर्ण बना दिया है —

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से आ बसंत रजनी।

- - - - - - - - - - - -

मुक्ताहल अभिराम बिछा दे चितवन से अपनी।
पुलकती आ बसंत रजनी।

विशेषण-विपर्यय अलंकार का प्रयोग करते हुए आपने निद्रा को 'उन्मन' कहा है, जबकि निद्रावाला व्यक्ति उन्मन होता है और उसी की यह दशा होती है, निद्रा की नहीं होती।

निद्रा उन्मन, कर कर विचरण
लौट रही सपने संचित कर।

इसी प्रकार विशेषण-विपर्यय अलंकार का प्रयोग करते हुए ... में मधुरता का झरना कहा है, जबकि कसक वाले व्यक्ति के ... मधुरता भरी जाती है, प्यासे लोचनों से आँसू झड़ा करते हैं, कोई व्यक्ति नहीं झड़ा करता —

कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित
कौन प्यासे लोचनों में घुमड़ घिर झरता अपरिचित

इसी प्रकार (1) उड़ते कन-कन से फूट-फूट मधु के निर्झर से
सजल गान

(2) दुःख के पद छू बहते झर-झर,
कण-कण से आँसू के निर्झर,

(3) देखूँ विहँगों का कलरव
घुलता जल की कल-कल में,

आदि में ध्वन्यर्थ-व्यंजना अलंकार का प्रयोग किया है।

(7) नवीन छन्दबद्धता :- छायावाद ने तुकान्त, अतुकांत, अर्द्धतुकान्त, दीर्घ तुकान्त आदि कितने ही प्रकार की कविताओं का प्रचार करके हिन्दी के काव्य-क्षेत्र में नूतन छंद-योजना का आविष्कार किया है। इन छन्दों में संगीत हो न हो किन्तु एक लय, ताल, एवं क्रम तो होता ही है। महादेवी ने प्राय: संगीतमय तुकान्त शब्दों का ही प्रयोग किया है, क्योंकि उन्होंने गीतों का निर्माण अधिक किया है। उनके सभी गीत संगीत के शास्त्रीय बन्धनों में तो आबद्ध नहीं हैं, किन्तु अपनी संगीतात्मकता एवं नादात्मकता के कारण पूर्णतया गेय हैं, जिनमें संगीत का माधुर्य हिलोरें ले रहा है। जैसे -

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल ? - (स्थायी)
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल अंतरा
प्रियतम का पथ आलोकित कर।